छायावाद

डॉ. मकरन्द भट्ट,

राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, चिमनपुरा

हिन्दी साहित्य के लगभग हजार वर्ष के कालखण्ड में **छायावाद**[1] एक विशिष्ट आन्दोलन है। द्विवेदी युगीन काव्य धरातल से सर्वथा भिन्न रूप में सन् 1918 के आसपास एक नवीनता और मौलिकता लिए हुए कुछ रचनाएँ सामने आयी। फिर तो नवीन भाव भंगिमा की यह कविता व्यापक रूप से साहित्य प्रेमियों का ध्यान आकर्षित करने लगी। साहित्य के समालोचकों ने इस काव्यधारा को **छायावाद** का नाम दिया तथा 1918 से 1936 तक के कालखण्ड में अविरल प्रवाह के साथ यह काव्यधारा गति पकड़ती गई।[2] इस काव्यधारा में रची गई रचनाएँ हिन्दी साहित्य में अपनी विशेष पहचान रखती हैं। **प्रसाद, पंत, निराला** और **महादेवी** जैसे कवि **छायावाद** के स्तम्भ माने जाते हैं।

सर्वप्रथम इस काव्यधारा के शीर्षक पर विचार करना आवश्यक है। इस काव्यधारा को छायावाद क्यों कहा गया? इसे छायावाद नाम देने का श्रेय किसे जाता है? छायावाद का अभिप्राय क्या है? इन प्रश्नों पर विचार करते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में साहित्यिक विमर्श चलता रहा है। ऐसा माना जाता है कि सर्वप्रथम **सुशील कुमार** और **मुकुटधर पाण्डेय** ने लेखमाला प्रकाशित की, जिसमें नवीन भाव–भंगिमा वाली इस काव्यधारा को **छायावाद** नाम दिया गया। स्वयं **छायावाद** के प्रमुख रचनाकार **जयशंकर प्रसाद** ने अपने निबन्ध में भाषा की सूक्ष्मता और सांकेतिकता को लक्ष्य करते हुए छायावादी काव्य भाषा की तुलना **मोती की आब, चमक, कांति** या **छाया** से की है और इस प्रकार छायावादी काव्य भाषा की विशिष्टता को समझाने का प्रयास किया है। **आचार्य रामचन्द शुक्ल** ने भी **हिन्दी साहित्य के इतिहास** में छायावादी काव्य की **लक्षणा प्रधान भाषा** की चर्चा की है। **डॉ0 नगेन्द्र** ने अपने विवेचन में **छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहकर परिभाषित किया है।**[3] इसी प्रकार **महादेवी** ने अपनी रचनाओं को समझाते हुए इसे भावोछवसित कविता कहकर समझाया है। कहने का अभिप्राय यह है कि इन विचारकों एवं विद्वानों के द्वारा छायावाद को समझाने का जो प्रयास किया गया है, उनमें से ही कुछ प्रमुख लक्षण उभरकर सामने आते हैं। इन लक्षणों के आधार पर छायावादी काव्य को समझने का प्रयास किया जा सकता है। संक्षेप में छायावादी काव्य के लक्षण इस प्रकार हैं :–

छायावादी कविता की आत्मीयता ने पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित किया। हिन्दी काव्य परम्परा में यह काव्य प्रविधि बिल्कुल नए ढंग की थी। इस काव्य संसार में कवि निर्वैव्यक्तिता का सारा आवरण उतारकर एक आत्मीय की भांति बेहद निजी ढंग से बातें करता दिखाई पड़ता है। मन के भावों को प्रकट करने के लिए वह कल्पित कहानी, पौराणिक या राधा कृष्ण के श्रृंगारी वर्णनों की ओट नहीं लेता। वह अपनी बात सीधे–सीधे अपने–अपने मुँह से उत्तम पुरुष शैली में कहता है। कहना न होगा इससे कवि और पाठक के बीच जिस सुखद अनुभूति का संचार होता है, वह अपने पहले के काव्य अनुभवों से विलक्षण है। इस निजता और आत्मीयता के पीछे आधुनिक युवक का वह व्यक्तित्व है जो स्वयं को सीधे–सीधे अभिव्यक्त करने के लिए सामाजिक स्वाधीनता की कामना

करता है। भक्तिकाल के प्रचलित आत्म निवेदन और रीतिकाल की रूढ़िग्रस्त तटस्थता के बरअक्स वैयक्तिता का यह आग्रह विद्रोही तेवर था। छायावादी कवियों ने साहसपूर्वक काव्य में व्यक्त अनुभूतियों को अपनी अनुभूतियाँ कहकर प्रस्तुत किया।[4] काव्य संसार में **मैं, मेरा** जैसे शब्द एकबारगी प्रखर वेग से प्रकट होने लगे। **निराला** ने लिखा –

''मैंने मैं शैली अपनाई''

या

''देखा मुझे इस दृष्टि से''

पंत की यह घोषणा कितनी रूढिभंजक थी– **'बालिका मेरी मनोरम मित्र थी'।** इस तरह की अन्य अभिव्यक्तियों भी आसानी से मिल जाती हैं। छायावाद के पहले यह चेतना बमुश्किल नजर आती थी। यदि आती भी थी, तो आध्यात्मिकता की ओट में। प्रेम में जब रचनाकारों ने सामाजिक स्वाधीनता की छूट ली, तब इसे आधुनिक चेतना की जनतांत्रिक विजय से नवाजा गया। इस संदर्भ में **नामवर सिंह** की टिप्पणी गौरतलब है – **''कविता में जहाँ देवताओं के प्रेम का वर्णन होता था, वह स्थान साधारण मनुष्य ने ले लिया, यह जनतांत्रिक भाव की विजय है। यह मध्यमवर्ग की पहली सामाजिक स्वाधीनता है।''**[5]

सम्राट एडवर्ड अष्टम जब अपनी प्रेमिका के लिए सम्राटपद त्याग देते हैं, तब **निराला** कहते हैं :–

सिंहासन तज उतरे भू पर, सम्राट दिखाया

सत्य कौनसा वह सुन्दर

(अनामिका)

प्रेम के लिए सिंहासन का त्याग, इसे निराला सुन्दर सत्य की संज्ञा देते हैं। छायावादी कवियों ने साहसपूर्वक काव्य में व्यक्त अनुभूतियों को अपनी अनुभूतियाँ कहकर प्रस्तुत किया।

प्रकृति प्रेम छायावादी काव्य आन्दोलन की बहुत बड़ी विशेषता है। सभी छायावादी कवियों ने अपने–अपने काव्य में प्रकृति का चित्रण बड़े आग्रह के साथ किया है। इस लिहाज से निराला की **'बादलराग,** पंत की **परिवर्तन** और प्रसाद की **कामायनी** में चित्रित प्राकृतिक दृश्यों को देखा जा सकता है। पंत कहते हैं कि–**'उड़ गया अचानक लो भूधर, फड़का अपार वारिद के पर।'** इसी तरह **प्रथम रश्मि**[6] कविता में पंत ने सुबह के सूरज की पहली किरण के जादू का प्रभावी चित्रण किया। जहाँ निराकार तम में सब कुछ अस्पष्ट था, वहाँ सुन्दर सृष्टि दिखायी देने लगी–

''निराकार तम मानो सहसा

ज्योति–पुंज में हो साकार।

बदल गया द्रुत जगज्जाल में

धरकर नाम–रूप नाना।'' (प्रथम रश्मि)

इसके बाद तो जैसे पूरी प्रकृति झूमने लगी। हर तरफ जागरण का संदेश फैल गया–

''खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि

जगी सुरभि, डोले मधुबाल

स्पंदन, कंपन औ नवजीवन

फिर सीखा जग ने अपनाना।' (प्रथम रश्मि)

वेदना तथा करुणा का प्राधान्य इस काल की कविता में देखने को मिलता है। हर्ष–शोक, हास–रुदन, विरह–मिलन आदि विषमताओं से घिरे मानव जीवन को देखकर कवि हृदय में वेदना उमड़ पड़ती है। पंत तो काव्य की उत्पत्ति ही वेदना से मानते हैं। वे कहते हैं –

''वियोगी होगा पहला कवि,

आह से उपजा होगा गान,

उमड़कर आँखों से चुपचाप

वही होगी कविता अनजान।'

छायावादी कविता में नारी के प्रति सर्वथा नवीन दृष्टिकोण देखने को मिलता है। यहाँ नारी वासना की पूर्ति का साधन नहीं है, यहाँ तो वह प्रेयसी, जीवन सहचरी, माँ आदि विविध रूपों में उभरी है।[8] प्रसाद द्वारा चित्रित इस भावमयी नारी का सुकुमार रूप अत्यंत रमणीय है –

'नारी तुम केवल श्रृद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में'

(कामायनी–श्रद्धासर्ग)

पलायनवादी प्रवृति भी छायावादी कविता में कम मुखर नहीं है। छायावादी कवि इस संसार से ऊबकर अन्यत्र जाना चाहता है, इसका मुख्य कारण यह है कि वह सर्वत्र इस संसार में दुःख ही दुःख देखता है, उसे सुख का अभाव दृष्टिगत होता है। **निराला 'जग के उस पार जाना चाहते हैं', प्रसाद** भी अपने नाविक से इस कोलाहल पूर्ण संसार से दूर चलने का अनुरोध करते हैं–**''ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे–धीरे, जिस निर्जन में सागर लहरी, अम्बर के कानों में गहरी, निश्चल, करूण कथा कहती हो, तज कोलाहल की अवनि रे।''**

रचनाशीलता के स्तर पर छायावाद की विशेषता है–कल्पनाप्रियता। वैसे तो हर रोमांटिक आन्दोलन अपने कल्पना–वैभव के लिए ख्यात रहा है, पर छायावादी कल्पना की अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक भूमिका रही है। द्विवेदी युग की कविताओं में कल्पना का नितान्त अभाव है। सम्भवतः इसीलिए दिनकर ने कहा कि **''छायावाद द्विवेदी युग की कल्पनाशीलता के प्रति विद्रोह था।''** वो प्रसाद द्वारा श्रद्धा के सौन्दर्य में द्रष्टव्य है :–

''नील परिधान बीच सुकुमार
खुल गया मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ–वन बीच गुलाबी रंग।''

(कामायनी–श्रद्धासर्ग)

छायावादी कविता में अज्ञात सत्ता के प्रति आकर्षण का भाव देखने को मिलता है। छायावादी कवि प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में इसी सत्ता के दर्शन करता है। उसका इस अनन्त के प्रति विस्मय और जिज्ञासा का भाव है। **पंत** कहते हैं :–

'न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन।'[9]

छायावादी कवियों ने अभिव्यक्ति के क्षेत्र में क्रांति मचा दी। इन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए प्रायः मुक्तक एवं गीति–शैली को चुना। छंदों के प्रयोग में छायावादी कवियों ने मौलिकता का परिचय दिया। **निराला** जैसे कवियों ने मुक्त छंद तक का आविष्कार किया। **रामधारीसिंह 'दिनकर'** ने कहा है कि **''छायावाद की सबसे बड़ी देन यह रही कि उसके यंत्र–गृह में एक समय कर्कष समझी जाने वाली खड़ी बोली गलकर मोम हो गई।''** इस काल के कवियों ने **उत्प्रेक्षा, रूपक, मानवीकरण** आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।[10] **प्रसाद** ने **कामायनी** में लिखा है –

''सिंधु सेज पर धरा–वधू अब, तनिक संकुचित बैठी सी
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किये सी ऐंठी सी।''

सारांश यह है कि भाव पक्ष एवं कला पक्ष की दृष्टि से छायावाद का काव्य अत्यंत प्रौढ़ है, छायावाद ने जो कुछ दिया है, वह साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जायेगा।

संदर्भ

1. ''छायावाद का आरम्भ सामान्यतः 1920 के आसपास से माना जाता है। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं से पता चलता है कि 1920 के आसपास छायावाद संज्ञा का प्रचलन आरम्भ हो गया चुका था।''

   नामवर सिंह–छायावाद, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली वर्ष 2011 पृ.सं. 11

2. ''द्विवेदी युग से आती हुई विनयशील इतिवृत्तात्मकता के मुकाबले में अपने अहंकारी व्यक्तित्व एवं धुँधली वाणी के साथ अचानक उठ खड़ा होने वाला छायावाद हिन्दी भाषा जनता को अजनबी सा लगा। चारों ओर से आवाज आई, अज्ञात–कुल–शीलस्य वासो देयो न कस्यचित्। किसी ने कहा यह रवीन्द्रनाथ का अनुकरण है, किसी ने कहा, यह अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव है, किसी–किसी के कहने का यह भी अभिप्राय था कि साहित्य रहस्यवादी साधु बनकर जनता को ठगना चाहता है।''

   रामधारीसिंह दिनकर – मिट्टी की ओर, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज 2010,पृ. सं. 16

3. **डॉ. नगेन्द्र**–सुमित्रानन्दन पंत, 1938 पृ.सं. 2

4. ''छायावाद हिन्दी में उद्दाम वैयक्तिकता का पहला विस्फोट था।''

   रामधारी सिंह दिनकर–मिट्टी की ओर, लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज

   2010, पृ. सं. 18

5. नामवर सिंह–छायावाद राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 वर्ष 2011 पृष्ठ संख्या 19

6. प्रथम रश्मि 1919 में लिखी गई थी और 1927 में **'वीणा'** में संग्रहीत हुई थी।

7. **सुमित्रानन्दन पंत**– आँसू, इण्डियन प्रेस लि. प्रयाग, पृ. सं. 16

8. ''श्रद्धामयी, करूणामयी, कल्याणी, कलामयी तथा प्रेममयी जीवन–सहचरी नारी का चित्रण करके छायावादी कवियों ने समाज और साहित्य को अभिनव जीवन–रस से सींच दिया।''

   नामवर सिंह – छायावाद, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली वर्ष 2011 पृ. सं. 70

9. पंत सं. 2012, मौन निमंत्रण/सुमित्रानन्दन पंत–कविता कोश

10. ''अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भावों की अभिव्यक्ति के विशिष्ट द्वार हैं।'' सुमित्रानन्दन पंत–पल्लव, इण्डियन प्रेस लि. प्रयाग पृ. सं. 26

Copyright © 2015 *Dr. Makarand Bhatt*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.